



# अभलासे अमल

मौलाना जलील अहसन नदवी रह.

राहे अमल हिन्दी से लिप्यान्तरण किया है.

**‘नोट:- उदीष की रिवायत का ખुलासा है.’**

**बिस्मिल्लाहिर्रहमानिर्रहिम**

मुस्लिम, रावी उजरत अबू डुरैरा रदी.

ખુલાसा- रसूलुल्लाह ﷺ ने इरमाया कि अल्लाह तआला ने इरमाया मे दूसरे शरीकों के मुकाबले मे शिर्क से ज्यादा बेनियाज हूं, जिस शप्स ने कोई नेक काम किया और उस मे मेरे साथ उस ने किसी और को शरीक किया तो मेरा उस के अमल से कोई संबंध नहीं, मे उस के अमल से बेजार हूं, वह अमल तो उस दूसरे का हिस्सा है जिस को मेरे साथ उस ने शरीक किया.

जिन लोगों को नेकी की तौफीक मिली है उन को और दीन का काम करने वालों को ખાसतौर से सोचना चाहिए कि इस उदीस मे क्या बात कही गई है इस मे आप ﷺ ने बताया है कि नेकी का जो काम भी हो चाहे उस का तअल्लुक एबादात से हो या मुआमलात से हो, चाहे वह नमाज हो या ખुदा के बन्दों की ખिदमत, अगर उस का मकसद दिखावा

और शौहरत हासिल करना हो, या किसी गिरोह या किसी शाब्स से शाबाशी लेनी हो तो अल्लाह के यहा उस की हैसियत सिर्फ़ सिफ़र की होगी और अगर उस की ખુशनूदी भी उस का मकसद है और लोगों की शाबाशी लेनी भी उस का मकसद है तो भी वह अमल बेकार होकर रह जायेगा, और अगर शुर् में तो ખुदा की ખुशनूदी ने अमल पर उभारा मगर बाद में दूसरों की ખुशनूदी ने उसकी जगह ले ली तो यह अमल भी बेकार जायेगा.

एसलिये बहुत होशियार रहना होगा, शैतान के आने के हमारो दरवाजे हैं, ऐसे दिभाई न देने वाले दुश्मन के हमलों से बचने की अेक ही तरकीब है अल्लाह के सामने गिरना, उससे अपनी मजबूरी बयान करना, ખुदा मदद न करे तो कमजोर इन्सान शैतानी हमलों से कैसे बच सकता है.?